Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय इतिहास में मथुरा कला का योगदान

डॉ. शुभम शिवा* देवेन्द्र पाल सिंह**

* प्रोफेसर (चित्रकला) दयानंद गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, कानपुर, सम्वद्ध छात्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.) भारत
** शोधार्थी (चित्रकला) दयानंद गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर, सम्वद्ध छात्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – प्रागेतिहासिक युग से लेकर शुंगकाल तक के विकास के पश्चात मथुरा की कला कुषाण युग प्रविष्ट हुई। इस युग में इस कला के कुछ विशेषताएँ आ गयी जिनके कारण आगे चल कर इसने सम्पूर्ण भारत की कला को प्रभावित किया। ई. पूर्व द्वितीय से लेकर ईशा की छटी शताब्दी तक मथुरा उत्तरी भारत में स्थापत्य कला तथा मूर्ति कला का एक केन्द्र रहा है। शुंग काल में मथुरा की कला नितान्त देशी ढंग पर विकसित हुई।

उस समय वह साँची और भरहुत को मध्यदेशीय कला से प्रभावित हुई। गान्धार कला का प्रभाव भी मथुरा कला में परिलक्षित होता है। साथ ही मथुरा में ही बुद्ध की मानुषी रूप मूर्ति की सर्व प्रथम एवं इस युग में मथुरा के शिल्पियों ने बोधिसत्वों, जैनों. के 24 तीर्थकरो, हिन्दुओं के देवताओं शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य और उनके अनुचर, कार्तिकेय, गणेश, पार्वती, दुर्गा, सप्त मातृका, लक्ष्मी, सरावती, इन्ड, कुवर, हारीती, यक्ष–यक्षी, नाग–नागी तथा लोक में प्रचलित देवी–देवताओं का अंकन किया। सम्पूर्ण मध्य भारत में यहाँ की मूर्तिया जाती थीं। श्रावस्ती, कौशाम्बी, सारनाथ, साँची,तक्षशिला आदि में भी यहाँ से इसके अतरिक्त प्रतिमाएँ मंगायी जाती थी और वहाँ के कारीगर इन्हें देखकर अन्य प्रतिमाएं बनाते थे। इस प्रकार इन देवी–देवताकों को जो रूप मिले वे इन्हीं कुषान् कालीन मथुरा के शिल्पियों की देन है। इसके के बाद अन्य युगों में मूर्तिकला को विकास हुआ।

मथुरा शैली की बाबाठी कलाकृतियों में प्राय: चितिदारलाल बलुए पत्थर की प्रयोग हुआ है जो निकट ही स्थित फतेहपुर सीकरी, रुपवास, हि–डॉन आदि से स्थानों प्रचुर मात्रा में सुलभ प्राप्त था।

वर्तमान मथुरा तथा उसके आसपास का क्षेत्र (प्रदेश) जिसे ब्रज कहा जाता हैय प्राचीन काल में शूरसेन जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। इसकी राजधानी मथुरा थी। यहाँ की कला को देखते हुए इसे भारत का ऐथेन्स कहना यक्ति संगत है। मौर्य काल से लेकर लगभग 12वीं शाताब्दी तक कलाकृतियों के निर्माण की विविध शिल्प शालायें नवीन उत्साह एवं मौलिकता के साथ कार्य कर रही थी। भारतीय कला के क्षेत्र में मथुरा ने जो विशाल योगदान दिया है, उस ओर ध्यान देने पर यह एक ऐसे महत्वपूर्ण कला केंद्र के रूप में सामने आता है जहाँ की कलाकृतियाँ नयना विराम सहज दुर्लभ सौन्दर्य एवं बहुमुखी व्यंजनाओं से ओतप्रोत रही है।

मथुरा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री में प्राचीन मूर्तियाँ, चित्र, अभिलेख, सिक्के तथा इमारती वास्तुएँ आदि प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई हैं। मथुरा और उसके आसपास से अव तक कई सौ प्राचीन शिलालेख उपलब्ध हो चुके हैं जिनसे तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति पर भी बहुत प्रकाश पड़ा है। मथुरा कला का विस्तार क्रम केवल मथुरा एवं उसके आसपास तक ही सिमित नहीं रहा अपितु पूर्व एवं दक्षिण तक फैला। इन अवशेषों के द्वारा प्राचीन स्थापत्य की भी जानकारी हो सकी है कि मथुरा में किस प्रकार के मंदिर, विहार, स्तूप, महल व मकान आदि थे।

शुंग काल से लेकर गुप्त काल के बीच पनपी हुई मथुरा की कला में पाषाण एवं मृत्ति का के माध्यम से कई नवीन प्रयोग किये गये। यहाँ संस्कृति, धर्म एवं कला की त्रिवेणिय के दर्शन होते हैं। यह नगरी अपने भौगोलिक महत्व के कारण भारतीय, भारतीय–शक और यूनानी सभ्यताओं की संगम स्थली बनी। ब्राह्मण, जैन और बौद्ध धर्म की त्रिधाराओं का मिलन भी मथुरा में ही हुआ, इन्ही धाराओं के कारण मथुरा की कितनी ही महत्वपूर्ण व सुन्दर कलाकृतियों का निर्माण....हुआ। इसके अतिरिक्त मथुरा में एक तीसरी भव्य त्रिवेणी के दर्शन होते हैं, यह भारतीय इतिहास के तीन महत्वपूर्ण युगों अर्थात मौर्य–शंग, शक–कुषाण व गुप्त काल का संगम है। इन विभिन्न युगों ने भी मथुरा कला के निर्माण में भरपूर योग प्रदान किया।

मौर्य– शुंग काल में मथुरा ने अपनी प्राचीन परम्परा से प्राप्त अभिप्रायों एवं धार्मिक मान्यताओं का प्रचुर प्रयोग किया। ये मान्यताएँ एवं अभिप्राय यक्ष पूजा, नागपूजा, पदमश्री या श्री लक्ष्मी के रूप में शक्ति की आराधना चक्र एवं चौत्य की अर्चना, स्तम्भ पूजा आदि विविध रूपों में चली आ रही थी। कुषाण सम्राटों का शासन काल वस्तुत: उस का स्वर्ण युग था। इस युग की कला में द्रष्टिगोचर होने वाली क्रियाशीलता, अथक लगन, उर्वरा सृजन शक्ति तथा अभिनव प्रयोग करने की क्षमता भारतीय कला के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। सचमुच कुषाण कला अत्यंत साहसिक थी, जिसका सबसे सुन्दर उदाहरण बुद्ध प्रतिमा का निर्माण है।

कुषाण काल के बाद गुप्तों का युग आया इसमें मथुरा कला ने देव प्रतिमा व देवायतनों के निर्माण मर समुचित हाथ बँटाया।

मथुरा की कलाकृतियों में पत्थर की प्रतिमाओं तथा प्राचीन वस्तुखण्डों के अतिरिक्त मिट्टी के खिलोनों का भी समावेश होता है। इन सबका प्राप्ति स्थान मथुरा शहर और उसके आसपास का क्षेत्र है। वर्तमान मथुरा शहर को देखने से स्पष्ट होता है कि यह सारा नगर टीलों पर बसा है। इसके आसपास भी लगभग 10 मील के परिसर में अनेक टीले हैं। इनमें से अधिकतर टीलों के गर्भ से मथुरा कला की अति उच्च कोटि की कलाकृतियों प्रकाश में आयी हैं। कंकाली टीला, भुतेश्वर, सोंख टीला, जमालपुर टीला आदि ऐसे ही महत्वपूर्ण स्थान हैं।

महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यहाँ कुषाण एवं गुप्तकाल में अनेक विशाल

विहार, स्तूप मंदिर तथा भवन विद्धमान थे, वहाँ उनमें से एक भी अवशिष्ट नहीं हैं। सब के सब धराशायी होकर पृथ्वी के गर्भ में समा गए हैं।

'मथुरा कला की प्रथम मूर्ति के दर्शन और उसकी पहचान सन 1836 में हुई थी। आज यह भारतीय संग्रहालय कलकत्ता मैं है उस समय इसे सायलेनस के नाम से पहचाना गया था। वस्तुत: आसवपान का दृश्य है। इसके बाद सन 1853 में जनरल कनिंघम ने कटरा केशवदेव टीला से कई मूर्तियाँ व शिलालेख प्राप्त किये उन्होंने पुन: 1862 में इसी स्थान से गुप्त संवत् 230 (सन 549-50) में बनी हुई यशाविहार में स्थापित सर्वांग सुन्दर बुद्ध की मूर्ति खोज निकाली।

यह इस समय लखनऊ के राज्य संग्रहालय में है। इसी बीच सन 1860 में मथुरा कचहरी के निर्माण के लिए जमालपुर टीले को समतल बनाया गया जहाँ किसी समय दधिकर्ण नाग का मन्दिर व हुविष्क विहार था। इस खुदाई में मूर्तियाँ, शिलालेख, स्तम्भ, वेदिका स्तम्भाधार आदि के रूप में मथुरा कला का विपुल भण्डार प्राप्त हुआ। इसी स्थान से प्राप्त सर्वोत्कृष्ट गुप्तकालीन बुद्ध मूर्ति मिली जो राजकीय संग्रहालय मथुरा में प्रदर्शित है।

सन 1871 में जनरल कर्मिघम ने पुन: मथुरा यात्रा की और इस समय उन्होंने दो अन्य टीलों कंकाली और चौवारा टीले की खुदाई कराई। कटरा केशवदेव से दक्षिण में लगभग आधे मील के अंतर पर बसे हुए कंकाली टीले ने मानो मथुरा कला का विशाल भण्डार ही खोल दिया। यहाँ कभी जैनों का प्रसिद्ध स्तूप व बौद्ध स्तूप था।

कर्मिघम साहब ने यहाँ से कनिष्क के राज्य संवत् 5 से लेकर वासुदेव के राज्य संवत्सर 18 तक की अभिलिखित प्रतिमाएँ प्राप्त की। चौवारा टीला वस्तुत: 12 टीलों का समूह है जहाँ पर कभी बौद्धों के स्तूप थे।

2 सन 1872 में तत्कालीन कलैक्टर मथुरा, ग्राउज महोदय ने पालीखेड़ा नामक स्थान से एक महत्वपूर्ण प्रतिमा आसवपायी कुबेर को प्राप्त किया। सन 1888 से 1891 तक डॉ. फ्यूहरर ने लगातार कंकाली टीले की खुदाई कराई। पहले ही वर्ष में 737 से अधिक प्रतिमाएँ मिली जो लखनऊ के राज्य संग्रहालय में भेज दी गई। सन 1966 से 1974 तक मथुरा के निकट सौंख नामक स्थान पर टीले की खुदाई जर्मन विद्धान हरवर्ट हर्टल ने कराई तथा वहाँ से लगभग.....3 12,000 कलाकृतियाँ प्राप्त हुईं जिनमें प्रस्तर प्रतिमाएँ, मृण मूर्तियाँ, मृत्त पात्र तथा देव सेनानी कार्तिकेय की कांस्य प्रतिमा भी प्राप्त हुई जो बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

फरवरी सन 1912 में मॉट गाँव के निकट टोकरी या इटोकरी नामक टीले की खुदाई कराई और कुषाण सम्राट विम कडफाइसिस, कनिष्क और चस्टन की प्रतिमाओं को अन्यान्य प्रतिमाओं के साथ प्राप्त किया। सन 1915 में नगर और और आसपास के गाँव के कई कुओं की सफाई कराई गयी और उनमें से लगभग 600 मूर्तियाँ मिलीं।

मथुरा में जैन और बौद्ध धर्म के बड़े केंद्र स्थापित हो जाने से यह युक्ति सम्मत था कि यहाँ अनेक स्तूपों तथा विहारों का निर्माण होता। मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त एक मूर्ति पर खुदे हुए द्वितीय शती के एक लेख से पता चलता है कि उस समय से बहुत पूर्व मथुरा में एक बड़े जैन स्तूप का निर्माण हो चुका था। लेख में उस स्तूप का निर्माण (बौद्ध स्तूप) दिया है। वर्तमान कंकाली टीले की भूमि पर उस समय से लेकर प्रा: 1100 ई. तक जैन इमारतों एवं मूर्तियों का निर्माण होता रहा। सम्राट अशोक, कनिष्क एवं अन्य शासकों द्वारा मथुरा नगर तथा उसके आस-पास कितने ही स्तूपों तथा विहारों का निर्माण कराया गया।

मथुरा कला की प्रतिमाएँ बड़ी संख्या में मथुरा के बाहर भी मिली हैं। अब तक चित्तीदार लाल बलुए पत्थर की कई हजार मूर्तियाँ, स्तम्भ, शिलापट, सिरदल, मृण मूर्तियाँ एवं मृत्त पात्र आदि मिल चुके हैं। इनके देखने से पता चलता है कि प्राचीन मथुरा में हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म कई शताब्दियों तक साथ-साथ विकसित होते रहे। यह सामग्री मथुरा एवं उसके आस-पास यत्र-तत्र बिखरे टीलों सेसमय-समय पर प्राप्त होती रही हैं जो आज पुरातत्व की धरोहर है।....

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, आर. सी.(1993). स्पलैंडर ऑफ मथुरा आर्ट एण्ड म्यूजियम: दिल्ली।
2. पाण्डे, गोविन्द चन्द. (1963). बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास: लखनऊ।
3. जोशी, एन. पी. (1965). मथुरा कला: मथुरा।
4. मित्तल, प्रभुदयाल. (1965). ब्रज की कलाओं का इतिहास।
5. शर्मा, आर. सी.. (1973). मथुरा म्यूजियम एण्ड आर्ट: मथुरा।
6. वाजपेई, के. डी. (1980). मथुरा: नई दिल्ली।
7. ग्राउज, एफ. एस.. (1882). मथुरा- ए डिस्टिक मेमायर।
8. ब्रेक ब्रोकमैन. (1911). मथुरा: ए गजेटियर।
9. आनन्द, मुल्कराज. (1962). ओरिजिन ऑफ दि बुद्ध इमेजेज (मार्ग) वा.-अंक-2
10. बिहुलर, जी.. (1896). एपिग्राफिक डिस्कवरीज ऐट मथुरा।
11. क्रेमरिश, स्ट्रेला. (1933). इण्डियन स्कल्पचर्स।
12. शिवाममूर्त, सी. (1961). इण्डियन स्कल्पचर्स।

चित्रसूची:-

मथुरा संग्रहालय सं. 00. ए.5

मथुरा संग्रहालय सं. 00.ए.1

मथुरा संग्रहालय सं. डी. 47

मथुरा संग्रहालय सं. सी. 1

****